शिक्षा के विकास में हरबर्ट स्पेन्सर के योगदान

प्रमोद यादव

सहायक प्राध्यापक, रूरल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, शेखपुरा, चण्डी, नालान्दा

शोध-सार

हरबर्ट स्पेन्सर प्रसिद्ध चिंतक एवं शिक्षाविद् थे। हरबर्ट स्पेन्सर परम्परा का अंध-भक्त नहीं थे। वे बालक की रुचियों का विकास करने उसे उच्चादर्शों की ओर ले जाना चाहते थे। उनके अनुसार बालक को अपने पैरों पर खड़े होने की क्षमता का विकास करना है जिससे कि वह स्वयं शिक्षा प्राप्त कर ले। स्पेन्सर ने अपने समय के पाठ्यक्रम की आलोचना की है, उनके अनुसार उसमें व्यावहारिकता का अभाव था। उस समय बच्चों के भावी-जीवन की तैयारी पर बल नहीं दिया जाता था। स्पेन्सर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को पूर्ण तथा सफल जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाना है। उन्होंने लिखा है- "पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। अत: किसी भी शिक्षा की पाठ्य-सामग्री की जाँच करने का लक्ष्य भी यही होना चाहिए कि उससे हमारी इस उद्देश्य की पूर्ति कहाँ तक होती है।'' पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए मनुष्य को इस बात का बोध होना चाहिए कि उसके शरीर और मस्तिष्क का विकास किस प्रकार होना चाहिए। उसमे अपना प्रबन्ध स्वयं करने की योग्यता होनी चाहिए। उसे परिवार-पालन, श्रेष्ठ नागरिक की भाँति आचार, प्रकृति प्रदत्त सुविधाओं का उपयोग तथा अपनी क्षमताओं का स्वयं तथा सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए प्रयोग इत्यादि कार्यो मे दक्ष होना चाहिए। इस समस्याओं पर विज्ञान प्रकाश डालते हैं। अत: विज्ञान की शिक्षा दी जानी चाहिए।

शब्द कुंजी: साहित्यिक शिक्षा,उपयोगितावादी,शिक्षा सिद्धांत, आधुनिक,समृद्ध, संस्कृति,वैज्ञानिक प्रवृत्ति

Received : 25/9/2025 https://doi.org/10.5281/zenodo.18258737 Acceptance : 20/11/2025

परिचय:

विज्ञान की प्रगति ने मानव-जीवन में क्रांति उत्पन्न कर दी है, जिसके परिणामस्वरूप लोगों ने आधुनिक जीवन की तैयारी के लिए साहित्यिक शिक्षा को अनुपयुक्त समझा और उस शिक्षा की मांग की जो व्यावहारिक जीवन में उपयोगी सिद्ध हो। इस दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करने पर बल दिया गया। अत: हम कह सकते हैं कि शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का अर्थ है शिक्षा के पाठ्क्रम में विज्ञानों और शिक्षा-विधि में वस्तुपरक शिक्षण, इन्द्रिय-प्रशिक्षण निरीक्षण आदि पर बल देना जिससे बालक भविष्य में पूर्ण जीवन व्यतीत करने में सफल हो सके। स्पेन्सर ने पूर्ण जीवन की समस्त क्रियाओं को पाँच भागों में बाँटा है और उससे संबंधित विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान किया है ताकि पूर्ण जीवन के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके। उसका विचार था कि शिक्षण विधि को रोचक, लाभप्रद एव मानसिक विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया के अनुसार होना चाहिए। उन्होंने शारीरिक तथा नैतिक शिक्षा पर भी बल दिया। बालकों के अपने समक्ष उपस्थित संधषों का सामना करने के लिए केवल मानसिक रूप में तैयार करने के लिए शिक्षा नहीं होनी चाहिए वरन् उन्हें शारीरिक रूप से योग्य बनाना चाहिए जिसे अत्यधिक क्षति को सहन कर सके। शिक्षा द्वारा उसकी बुरी प्रवृत्तियों को परिष्कृत एवं परिमार्जित करना चाहिए। इसके लिए शिक्षा द्वरा उसमें ऐसे संस्कारों और आदतों का निर्माण करना चाहिए जो सामाजिकता एवं संस्कृति की दृष्टि से उत्तम हो। प्रस्तुत आलेख में शिक्षा के वैज्ञानिक प्रवृति के साथ-साथ नैतिक शिक्षा, शरीरिक शिक्षा तथा शिक्षा के आधुनिक दृष्टिकोणों से संबंधित स्पेन्सर के विचारों के मूल्यांकन पर केन्द्रित है।

अध्ययन का परिक्षेत्र एवं मुद्दा :

हरबर्ट स्पेन्सर ने कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण शिक्षा-सिद्धांत दिये हैं। इस सिद्धान्तों को आधुनिक युग में सर्वमान्यता प्रदान की गई है। स्पेन्सर का प्रथम सिद्धांत यह है, ''सरल से जटिल की ओर बढ़ों''। इसका अभिप्राय यह है कि बालकों को सर्वप्रथम सरल बातें बतानी चाहिए, क्योंकि बिना इसको समझे वे जटिल बातें नहीं समक्ष सकते। पुराने

विचारों की सहायता से ही नये विचार आते हैं। नवीन विचार पुराने विचारों के निरन्तर क्रम के ही अग्रिम रूप है। अत: अपने शिक्षण में शिक्षक को इस दोनों का संबंध स्थापित करना चाहिए। बालक परिचित विचारों से ही अपरिचित विचारों की ओर अग्रसर होगा, और उन्हें अच्छी प्रकार समक्ष सकेगा। अत: शिक्षक को चाहिए कि वह परिचित से प्रारंभ करे। बालकों के विचार पहले अनिश्चित होते हैं। ज्यों-ज्यों वे आयु में बढ़ते जाते हैं, उनके विचार स्पष्टतर होते चले जाते हैं। अत: अनिश्चित से आगे बढ़ना स्वाभाविक है। स्पेन्सर के अनुसार, सर्वप्रथम शिक्षक को किसी बात को उदाहरण के द्वारा समझना चाहिए उसके उपरान्त वह सामान्य नियम की ओर जा सकता है। बालक की शिक्षा के लिए उसके ज्ञान का विकास भी उन्हीं दशाओं में होकर करना चाहिए, जिनमें होकर मानव जाति का विकास हुआ है। इसे संस्कृति-युग सिद्धांत कहा जाता है। बालक की शिक्षा उसके स्वयं के विकास स्तर पर ही निर्भर होनी चाहिए।

संस्कृति युग सिद्धांत से स्पेन्सर ने एक नया सूत्र यह निकाला कि प्रत्येक विषय की प्रयोगात्मक भूमिका होनी चाहिए अर्थात् किसी भी विषय को बोधगम्य बनाने के लिए प्रयोग के द्वारा उसके सत्यों की व्याख्या करनी चाहिए। बच्चों को थोड़ी बातें बतानी चाहिए, परन्तु उसका निष्कर्ष 'अधिक' निकलना चाहिए। इसकी सत्यता से सभी शिक्षा-शास्त्री सहमत हैं। स्वयं स्पेन्सर का पालन-पोषण इसी सिद्धांत के आधार पर हुआ था। यदि बालक स्वयं ही सामान्य निष्कर्ष निकाला करे तो उनमें आत्मनिर्भरता का समावेश होगा, परन्तु इस सिद्धांत का प्रयोग उसी सीमा तक करना चाहिए जहाँ तक यह व्यावहारिक हो। यदि बालक की सभी स्वाभविक प्रवृत्तियों को काम में लाया जाता है तो शिक्षा उसके लिए एक दुरूह विषय न होकर अत्यंत रूचिकर हो जायेगी। जो शिक्षा-सामग्री प्रयोग में लाई जाए। इसका चयन इस प्रकार होना चाहिए कि वह बालक की रूचि में वृद्धि करे और जिसमें उसकी भावना के रूप की झलक मिलती हो।

स्पेन्सर का विचार है कि बालकों के साथ निर्दयता का व्यवहार नहीं करना चाहिए। बालक जब कभी छोटी या बड़ी भूल करे तो उसे स्वाभाविक दण्ड ही दिया जाना चाहिए। बड़ों को चाहिए कि वे बालकों के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करे। बालक को आत्म संयम तथा यथासंभव अपना काम स्वयं करने की शिक्षा देनी चाहिए। स्पेन्सर के नैतिक शिक्षा संबंधी विचार आधुनिक युग में भी स्वीकार किये जाते हैं। उन्होंने बालकों की शारीरिक शिक्षा पर भी बल दिया। उनका कहना था कि भोजन के समय बच्चों को फटकारना नहीं चाहिए। भोजन में विभिन्नता होनी चाहिए। ग्रीष्म व शीट के वस्त्र विभिन्न प्रकार के होने चाहिए। स्कूल के पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा का उचित स्थान देना चाहिए। स्पेन्सर द्वारा प्रतिपादित मानसिक, शारीरिक तथा नैतिक शिक्षा-संबंधी सिद्धांतों ने आधुनिक शिक्षा-सिद्धांतों तथा कार्यक्रमों में उसके मौलिक सिद्धांतों की झलक विद्यमान है। प्रस्तुत शोध में शिक्षा के वैज्ञानिक प्रवृति में हरबर्ट स्पेन्सर के योगदानों को रेखांकित किया गया।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा :

जी0 एस0 डी0 त्यागी तथा पी0 डी0 पाठक ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक 'शिक्षा के सामान्य सिद्धांत'' में हरबर्ट स्पेन्सर के शिक्षा सिद्धांतों पर प्रकाश डाला है। इसके अनुसार स्पेन्सर ने शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृति को समावेश किया। साथ ही शिक्षा के उपयोगितावादी पक्ष पर बल देकर इस बात की चेष्टा की कि ''जो शिक्षा अब तक केवल कुछ मुठ्ठीभर सौभाग्यशाली लोगों का ही विशेषाधि कार थी, वह सभी को सुलभ हो सके। वर्तमान समय में भारतीय शिक्षा प्रणाली में सार्वशिक्षा अभियान, शिक्षा का सर्वजनीकरण इन्हीं के सिद्धांतों पर आधारित है।

पॉल मुनरो ने अपनी महत्त्वपूर्ण पुस्तक। Brief Course in the History of Education' में हरबर्ट स्पेन्सर के विचारों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया है कि सामान्य शिक्षा में विद्धानों का अध्ययन वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग तथा कार्य को प्रमाण पर आधारित करके ज्ञान को ग्रहण करना वैज्ञानिक प्रवृति के घोतक हैं। शिक्षा में आधुनिक वैज्ञानिक प्रवृति की प्रमुख विशेषताएँ प्राय: वे ही हैं जो इन्द्रिय यथार्थवादी प्रवृति की है। प्रथम-विषय वस्तु के महत्व पर बल तथा प्रकृति की घटनाओं का ज्ञान और द्वितीय-अध्ययन की आगमन-विधि के अनुभवातीत महत्त्व को स्वीकार करना।

एन0 आर0 स्वरूप सक्सेना तथा संजय कुमार ने अपनी महत्वपूर्ण रचना 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत' में हरबर्ट स्पेन्सर के शिक्षा उपादानों पर विशद् विश्लेषण किया है। स्पेन्सर का कथन है, ''शिक्षा जीवन की तैयारी है।'' शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य-हमें जीवन के लिए इस प्रकार तैयार करना है कि हम उचित

प्रकार का व्यवहार कर सकें और शरीर, मन तथा आत्मा का सदुपयोग कर सकें। उन्होने शिक्षा की वैज्ञानिक प्रवृति पर ही बल नहीं दिया, बल्कि शारीरिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल देकर एक अत्यन्त लोकोपकार का कार्य किया है। वास्तव में पर्याप्त शारीरिक व मानसिक विकास पर ही जीवन की सफलता निर्भर है।

एन0 आर0 स्वरूप सवसेना ने अपनी एक अन्य पुस्तक ''शिक्षा दर्शन तथा महान शिक्षा शास्त्री'' में स्पेन्सर के शैक्षिक विचारों का उल्लेख करते हुए स्पष्ट किया है कि शिक्षा की किसी भी योजना में ज्ञान के सभी अंगों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए, जिससे प्रत्येक व्यक्ति के किसी-न-किसी क्षेत्र में कुछ न कुछ ज्ञान लाभ करने का सुअवसर मिल सके। इस दृष्टि से स्पेन्सर के विचार बड़े जनतंत्रवादी हैं। वे शिक्षा को इस प्रकार ढालना चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार एक सुखी व समृद्ध जीवन व्यतीत करने के लिए पर्याप्त शिक्षा पाने का सुअवसर मिल सके।

ज्ञान के क्षेत्र में योगदान :

शिक्षा के वैज्ञानिक प्रवृति के प्रवर्त्तको में हरबर्ट स्पेन्सर का महत्वपूर्ण स्थान है। उसके शैक्षिक विचार व शिक्षा सिद्धांत व्यावहारिक है। मानसिक, शारीरिक तथा नैतिक शिक्षा-संबंधी सिद्धांतों ने आधुनिक शिक्षा-पद्धति को बहुत अधिक प्रभावित किया है। बहुत से आधुनिक शिक्षा-सिद्धांतों तथा कार्यक्रमों में उसके मौलिक सिद्धांतों की एक क्षलक दिखलाई पड़ती है। वे शिक्षा को इस प्रकार ढालना चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार एक सुखी व समृद्ध जीवन व्यतीत करने के लिए प्र्याप्त शिक्षा पाने का सुअवसर मिल सके। शिक्षा के उपयोगितावादी पक्ष पर बल देकर इस बात की चेष्टा की कि शिक्षा सभी को सुलभ हो सके। नि:संदेह हरबर्ट स्पेन्सर के शैक्षिक विचार व शिक्षा सिद्धांत आज भी प्रासंगिक और उपादेय है। अत: प्रस्तुत अध्ययन ज्ञान के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान कर सकता है।

निष्कर्ष:

बालक की शिक्षा के लिए उसके ज्ञान का विकास भी उन्हीं दशाओं में होकर करना चाहिए, जिनमें होकर मानव जाति का विकास हुआ है। इसे संस्कृति-युग सिद्धांत कहा जाता है। बालक की शिक्षा उसके स्वयं के विकास स्तर पर ही निर्भर होनी चाहिए। उन्होंने बालकों की शारीरिक शिक्षा पर भी बल दिया। उनका कहना था कि भोजन के समय बच्चों को फटकारना नहीं चाहिए। भोजन में विभिन्नता होनी चाहिए। ग्रीष्म व शीट के वस्त्र विभिन्न प्रकार के होने चाहिए। स्कूल के पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा का उचित स्थान देना चाहिए। शिक्षा जीवन की तैयारी है। शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण कार्य-हमें जीवन के लिए इस प्रकार तैयार करना है कि हम उचित प्रकार का व्यवहार कर सकें और शरीर, मन तथा आत्मा का सदुपयोग कर सकें। उन्होंने शिक्षा की वैज्ञानिक प्रवृति पर ही बल नहीं दिया, बल्कि शारीरिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल देकर एक अत्यन्त लोकोपकार का कार्य किया है। वास्तव में पर्याप्त शारीरिक व मानसिक विकास पर ही जीवन की सफलता निर्भर है।

संदर्भ ग्रथ सूची :

1. त्यागी, जी0 एस0 डी0 एवं पाठक, पी0 डी0 शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. सक्सेना, एन0 आर0 स्वरूप एवं संजय कुमार 2013, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. मूनरो पॉल: ए ब्रीफ कोर्स इन द हिस्टोरी ऑफ एडुकेशन।
4. सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप : शिक्षा दर्शन तथा महान शिक्षाशास्त्री, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. सिंह, डॉ0 ओ0 पी0, शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
6. चौबे, प्रो0 सरयू प्रसाद, : आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धांत, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. मालवीय, डॉ राजीव, : शिक्षा दर्शन एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।